The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

नवजागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय

डॉ.लोहंस कुमार कल्याणी

सहायक आचार्य
बी. एड. विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज,गोंडा, (उ.प्र.)

सारांश:

राजा राममोहन राय का जन्म1772 में बंगाल में हुआ था। आपको 19 वी शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण का संदेशवाहक, आधुनिक भारत का अग्रदूत, देश का पथ-प्रदर्शक माना जाता है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पटना और बनारस में हुई। इन्होंने प्राच्य भाषा संस्कृत, फारसी के अलावा विदेशी भाषा अंग्रेजी, फ्रांसीसी, लैटिन, यूनानी एवं हिब्रू की अच्छी जानकारी थी। सन 1814 में कंपनी की सेवा से अलग होकर राजा राममोहन राय ने स्वयं को जन - सेवा और समाज सुधार से जुड़ा।

बंगाल से शुरू हुए सुधार आंदोलन का नेतृत्व राजा राममोहन राय ने किया। इसी कारण राजा राममोहन राय को भारत के नवजागरण का अग्रदूत तथा सुधार आंदोलन का पहला नेता कहा जाता है। राजा राममोहन राय की उपलब्धि विभिन्न क्षेत्रों- धर्म, समाज, राजनीतिक आदि में देखी जा सकती है।

बीज शब्द : *पुनर्जागरण, अग्रदूत, सुधार आंदोलन,नवजागरण आदि।*

नवजागरण या रेनासा का पारिभाषिक अर्थ है-प्राचीन ज्ञान और संस्कृति को नये वातावरण और काल के परिप्रेक्ष्य में भविष्य के लिए परिवर्तित या रूपायित करना। एक नई चेतना के आधार पर ऐसे भविष्य का निर्माण, जिसमें मानव के विचार शक्ति की सम्भावनाओं पर पूरी आस्था रखी जाए। इसके द्वारा मानव समाज की वैचारिक दृष्टि को अनुकूल आदर्शों के अनुरूप उदार और बौद्धिक आधार दिया जाता है। विभिन्न देशों की सामाजिक और आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि पर रेनासा अलग-अलग देशों में अलग-अलग रूप लेता रहा है। कुछ देशों में नवजागरण का अंकुरण मुख्यतः साहित्य और कला के क्षेत्र में हुआ। इटली में राष्ट्रीयता की भावना के उन्मेष के साथ-साथ क्लासिक्स या गौरव इन्थों को फिर से मान्यता प्राप्त हुई। कला और स्थापत्य के क्षेत्र में विशेष उन्नति दिखाई दी। फ्रान्स में साहित्य और दर्शन नये रूप में निखर कर सामने आया। इंग्लैण्ड में साहित्य, दर्शन, धर्म और विज्ञान के क्षेत्र में, तथा जर्मनी में दर्शन शास्त्र की ओर रूचि बढ़ी और संगीत का भी व्यापक पुनरुत्थान हुआ। इस प्रकार रेनासां-युग यूरोप में पन्द्रहवीं शती में आरम्भ हुआ और परवर्ती चार शताब्दियों तक चलता रहा। लेकिन भारत में इस लहर को पहुँचते-पहुँचते कुछ समय लग गया। इसके ऐतिहासिक और राजनैतिक कारणों को समझना आवश्यक है। वस्तुतः भारत में नवजागरण का काल अठारहवीं शती के मध्य से आरम्भ होकर बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक मानना चाहिए, अर्थात् इस प्रक्रिया में ढाई सौ वर्ष लग गए। नवजागरण या रेनासां की संकल्पना या इसके सैद्धान्तिक परिभाषा के बारे में विद्वानों में सहमति नहीं है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि यूरोपीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रभाव में आकर गैर-यूरोपीय देशों में रेनासा की हवा चली। लेकिन कुछ दूसरे विद्वानों ने कहा है कि गैर-यूरोपीय देशों में रेनासां यूरोपीय आदर्शों पर नहीं, बल्कि यूरोपीय आधुनिकता के संस्पर्श में आने पर भारतीय नवजागरण की लहर देश की स्थानीय विशेषताओं को साथ लेकर। आगे बढ़ी। इस नवजागरण का काल निर्धारण भी एक समस्या है। यूरोपीय रेनासा की घटना-क्रम के साथ एशिया में पुनर्जागरण की समय-सारिणी को मिलाने की कोशिश करना भी न तो उचित होगा और न सर्वमान्य। इधर कई विद्वानों ने "रेनासा" को पारम्परिक समाज व्यवस्था से सर्वथा अता नई राष्ट्रीयता या राष्ट्रीय संचेतना के उदय को पुनर्जागरण की परिभाषा दी है। वस्तुतः जब 'नासा' को राष्ट्रीय जागरण और आधुनिकता के सन्दर्भ में देखा जाने लगा, तभी इस प्रत्यय का सही मूल्यांकन सम्भव हुआ। अठारहवीं शताब्दी में भारत में नवजागरण की प्रक्रिया के आरम्भ करने में दो सहायक तत्व थे। पहला था सार्वभौम मानव अधिकार की मान्यता के साथ राष्ट्रीयता और आधुनिकता की लहर, और दूसरा, ब्रिटिश शासकों में प्राच्यविद्या सम्बन्धी रूचि इसके द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति और साहित्य की एक नई भावमूर्ति स्थापित की जा सकी।

राममोहन भारतीय इतिहास के उस संक्रान्ति-काल में पैदा हुए थे, जब एक ओर घोर अन्धकार व्याप्त था और दूसरी ओर अँग्रेज़ों और दूसरे यूरोपीय व्यापारियों के माध्यम से पश्चिमी ज्ञान की पहली किरण का देश में आना आरम्भ हुआ था। राजनैतिक भारत सैकड़ों टुकड़ों में बँटा था। मुगल साम्राज्य अपनी अन्तिम साँस ले रहा था, और चारों ओर अराजकता का बोलबाला था। भारत में विदेशी साम्राज्य के उदय का इससे अच्छा समय भला और क्या हो सकता था?

इससे लगभग आठ-नौ सौ वर्ष पहले भारत में मुस्लिम धर्म और संस्कृति का आगमन हुआ था। दुर्भाग्य से धार्मिक और सांस्कृतिक समन्वय के स्थान पर विरोध और विघटनात्मक प्रवृत्तियों का ही बोलबाला रहा। हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति के बीच की खाई कभी पाटी न जा सकी। पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में मानक, कबीर, दादू, महामति आदि सन्तों ने धर्मों के बीच समन्वय की भावना को स्थापित करने की भरसक कोशिश की, लेकिन मध्ययुगीन संकीर्णता और धार्मिक रूढ़िवाद की बाढ़ में प्रगतिवादी स्रोतों के आगे बढ़ने ही न दिया। परिणाम यह हुआ कि लगभग एक हजार वर्ष तक साथ-साथ रहते हुए भी हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों का परस्पर विरोध भिट न सका। दोनों ही धर्म, अपनी-अपनी संकीर्णता की चहारदीवारियों के पीछे छिपे रहे। सत्रहवीं या अठारहवीं शती के भारत में कहीं भी समन्वय या एकीकरण का कोई केन्द्र न था

इधर मुगल शासन-व्यवस्था के पूरी तरह टूटने की प्रक्रिया में कुछ समय लगा। लेकिन अंग्रेजी शासन की नींव पड़नी आरम्भ हो गई थी। यह नींव मराठा शक्ति के पतन तक पूरी तरह जम गई थी। 1818 में गर्वनर जनरल हेस्टिंग्स ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारत की भूमि पर सार्वभौम सत्ता स्थापित करने की घोषणा की। राममोहन ने अपने बचपन और योवन में इस राजनैतिक नाटक को देखा था। उन्होंने यह भी देखा कि कैसे इस प्राचीन देश की शिथिल राष्ट्रीय एकता की भावना के साथ एक नया विदेशी-शासन तत्त्व आ जुड़ा। आधुनिक भारत में राममोहन ने ही सबसे पहले अनुभव किया कि इस पाश्चात्य शासन के पीछे एक ऐसी आधुनिक सभ्यता है, जिसके सम्पर्क में आने से भारतीय सभ्यता और संस्कृति और औद्योगिक पुनर्निर्माण को सक्रिय बनाया जा सकता है। युग-परिवर्तन के इस परिप्रेक्ष्य में भारत को मध्ययुगीन अन्धकार से निकाल कर, आधुनिक युग की नई रोशनी में लाया जा सकेगा। इस बात को समझने में भी उन्हें देर न लगी कि इस ज्ञान के आलोक के साथ शिल्प-विज्ञान को देश में प्रतिष्ठित करने के लिए यूरोपीय पद्धति द्वारा संचालित किसी शासन-व्यवस्था को कायम करना आवश्यक है। लेकिन उन्होंने देश के पुनरूत्थान और निर्माण के पाश्चात्य आदर्शों को ही एकमात्र साधन नहीं माना, बल्कि देश की सांस्कृतिक और सामाजिक विचारधारा के समन्वित स्वरूप को देश के पुनरुत्थान में सहायक तत्व के रूप में प्रतिष्ठित किया। राममोहन के. जीवन और कार्य पर विचार करने

से, हमें जरा भी झिझक नहीं होनी चाहिए. कि आधुनिक भारत के निर्माताओं में राममोहन का स्थान सर्वोपरि है। तत्समय इतिहास के एक ऐसे काल में पश्चिमी आलोक ने इस देश में प्रवेश करना आरम्भ किया, जब हम लोग धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक सभी क्षेत्रों से एक अराजक परिस्थिति में गुजर रहे थे। ऐसा नहीं था कि भारत में शिक्षा का प्रचार-प्रसार ही न रहा हो। हमारे देश ने प्राचीन काल में शिक्षा, संस्कृति, और प्रशासन के क्षेत्र में काफी उन्नति की थी। लेकिन मध्युगीन अंधकार के घटाटोप में हमारी उपलब्धियाँ छिपी पड़ी थीं। प्राचीन ही नहीं, बल्कि मुगल, काल में भी हमारा देश आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में कोई पिछड़ा हुआ देश नहीं था। वस्तुतः यह इतना समृद्ध देश था कि इस 'सोने की चिड़िया' पर बार-बार हमला होता रहा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भी इसी उद्देश्य से इस देश में पाँव जमाना आरम्भ किया था। लेकिन मुगल साम्राज्य के विघटन प्रक्रिया के काल में, अर्थात् सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में देश का आर्थिक और प्रशासनिक ढाँचा पूरी तरह ध्वस्त हो गया था। दूसरी ओर सामाजिक स्तर पर धार्मिक रूढ़िवाद और संकीर्णता ने समाज को खोखला बना दिया था। ऐसी स्थिति में देश प्रगतिशील विकास की कोई भी प्रक्रिया अपनाने की स्थिति में नहीं था।

विदेशी शासन के साथ-साथ स्वाभाविक रीति से पश्चिमी ज्ञान का आलोक इस देश में भी फैलने लगा। इतिहास बताता है कि पश्चिमी शिक्षा के विरुद्ध मुल्लाओं और पण्डों ने जोरदार आन्दोलन खड़ा किया था। इसका कारण कंवल यही था कि इस देश में शिक्षा का प्रचार ईसाई पादरियों के माध्यम से शुरू हुआ था, जिनका मुख्य उद्देश्य धर्म प्रचार ही नहीं, धर्म परिवर्तन भी था। यह राममोहन ही थे, जिन्होंने इस नए ज्ञान का स्वागत किया और धार्मिक चुगल से निकालकर असाम्प्रदायिक शिक्षा की नींव रखी।

मुस्लिम भारत यद्यपि धार्मिक रूप से अधिक संगठित था । लेकिन ऐतिहासिक कारणों से और अपनी रूढ़िवादी और साम्प्रदायिक संकीर्णता के कारण पश्चिमी विचारों और ज्ञान को ग्रहण करने की स्थिति में नहीं था। इसका नतीजा यह हुआ कि मुस्लिम जनता के क्षेत्र में पिछड़ गई और उन्होंने उठाया। लेकिन हिन्दुओं ने इस ओर काफी उत्साह बना रहा ।

इसका यथोचित लाभ नहीं दिखाया और उनके अगुआ राममोहन 1815 में जब कलकत्ता आकर पूरी तरह बस गए और अपना सार्वजनिक कार्य आरम्भ किया तो उनके सामने एक ऐसा सडा-मला समाज था कि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि कार्य कहाँ से शुरू करें। वे बचपन से ही धर्म के रूढ़िवादी स्वरूप का विरोधी होने के कारण उन्होंने इस प्रश्न पर अपना घर छोड़ दिया था। सारे समाज पर संकीर्ण धार्मिक रूढ़ियों का कठमुल्ला नियन्त्रण था। समाज को इस धार्मिक संकीर्णता से मुक्त करने का बीड़ा राममोहन ने तत्काल उठाया। प्रारम्भिक उपाय के रूप में उन्होंने आधुनिक शिक्षा का

प्रचार शुरू कर दिया। धर्म के शाश्वत मूल्यों को स्थापित करने और शिक्षा प्रचार के रास्ते से उन्होंने देश को आधुनिकता के दरवाजे तक ले आने में पथ-प्रदर्शक का काम किया।

संदर्भ सूची :

1.शिवनाथ शास्त्री, राममोहन राय, कलकत्ता, 1986

2.सौम्येन्द्रनाथ ठाकुर, भारतेर शिल्प विप्लव ओ राममोहन, कलकत्ता, रूपा, 1963

3.सौरिन्द्रमोहन गंगोपाध्याय, बांगालीर राष्ट्रचिन्ताः राममोहन थेके मानवेन्द्रनाथ, कालिकाता, सुवर्ण रेखा, 1968

4.सौम्येन्द्रनाथ ठाकुर, राजा राममोहन राय, नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी 1972

5.Carpenter, Lant: A Review of the Labours, Opinions, and Character of Raja Rammolan Roy in a discourse on Occasion of Death delivered in Lewin's Mead Chapel, Bristol, London and Bristol 1833.

6.Carpenter, Mary: Last days in England of the Rajah Rammolan Roy London, 1866,

7.Chanda, Ramaprasad & Majumdar, Jatindra Kumar (ed.): Letters and Documents Relating to the Life of Raja Ramunchan Roy Vol.1 (1791-1830) with an Introductory memoir. Calcutta, Orient Book Agency, 15988, 8.Chatterjer, Ramanand Rammona Roy and Mosier Indin, Calcutta. 1918. Collet, Sophia Dobson The life and letters of Raja Ranasan Roy. Int Bd, by Dilip Kumar Biswas & Prabhat Chandra Ganguli, Calcutta, Sadharan Brahmo Samaj, 1962, (First Elition 1900),

9.Crawford, 5. Cromwell. Rammohan Roye Hiserund Ethics, New Delhi, Arnold Heinemann, 1984.

10. Dasgupta, B.N. : The life and Times of Rajah Rammohan Roy. New Delhi, Ambika Publications, 1980.

11.Dasgupta, B.N. Rajah Rammohan Roy: The Last Phase, New Delhi, Uppal Publishing House, (1982)

12.The Father of Modern India. Commemoration Volume of the Rammohan Roy Centenary Celebrations. 1933. Calcutta, 1935.

13.Home, Amal: ed. Rammohan Roy: The Man and his work Calcutta, 1933.

14.Iqbal Singh, Rammolan Roy: A Biographical enquiry into the making of Modern India. 2nd rev. ed. Bombay, Asia Publishingh House, 1983. (First ed. 1958)

15.Joshi. V.C. ed. - Rammohan Roy and the Process of Modernization in India. Delhi, Vikas, 1975.

16.Kopf, David British Orientalism and the Bengal Renaisance. Calcutta, Firma K.L. Mukhopadhayay, 1969.

17.Majumdar, Jatindra Kumar (ed.): Raja Rammohan Roy and the Last Moghuls: a selection from official records 1803-1859, with an historical introduction. Calcutta, Art Press. 1939.

18.Majumdar, Jatindra Kumar (ed.): Raja Rammohan Roy and progressive Movements in India a selection from Records 1775-1845 with an historical Introduction. Calcutta, Art Press, 1941.

19.Majumdar, R.C. : Glimpses of Bengal in the Nineteenth century. Calcutta, Firma K.L. Mukhopadhyay, 1960.

20.Ray, Ajit Kumar: The Religious Ideas of Rammohan Roy, New Delhi, Kanak Publication. 1976.

21.Ray, Niharranjan, Ed.: Rammolan Roy a Bi-Centenary Tribule, New Delhi. National Book Trust, 1974.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/25

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ.लोहंस कुमार कल्याणी

For publication of research paper title

नवजागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com